# बहु विवाह के ज्योतिषीय योग

हेमलता शर्मा

बहु विवाह के ज्योतिषीय योग हिन्दू धर्म में विवाह को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संस्कार माना गया है। विवाह के बाद पति–पत्नी दोनों का ही जीवन बदल जाता है। कुछ शादियाँ तो सफल होती हैं और कुछ असफल। इसका क्या कारण है कि आधुनिक काल में 'शादी की जोड़ियाँ स्वर्ग में बनती हैं' वाली विचारधारा खत्म हो गई है।

आज की युवा पीढ़ी अपना जीवनसाथी स्वयं चुनती है, उनके लिए विवाह अपने जीवन को खुश रखने का एक साधन है, न कि कोई मजबूरी। जब भी आपस में तालमेल या सामंजस्य स्थापित करने में परेशानी होती है, तो वे रिश्ते को समाप्त कर देना ही अच्छा समझते है। यह उनके परिवार, खासतौर पर उनेक माता–पिता, के लिए बहुत कष्टकारी होता है।

इसको ज्योतिष के द्वारा अच्छी प्रकार से समझा जा सकता है क्योंकि ज्योतिष शास्त्रों में शीघ्र विवाह योग, विलम्ब से विवाह के योग, विवाह हीनता के योग, बहु–विवाह के योगों का वर्णन विस्तार से किया गया है। ज्योतिष शास्त्र में दो या दो से अधिक विवाह के बहुत योग दिए हैं। पाराशर होरा शास्त्र, फलदीपिका, सारावली जैसे ग्रंथों का अध्ययन करने के पश्चात, हमें कुण्डली देख कर ही पता चल जाता है कि किसकी एक शादी होगी और किसके दो या अधिक विवाह होंगे।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार प्रथम विवाह सप्तम से, द्वितीय विवाह नवम से और तृतीय विवाह एकादश भाव से देखे जाते हैं। कुछ ग्रंथो में कुटुंब भाव से भी द्वितीय विवाह को बताया गया है।

**ज्योतिष शास्त्र में वर्णित बहु विवाह के ज्योतिषीय योग :–**

- सप्तम भाव पाप ग्रहों से युक्त हो और सप्तमेश पीड़ित हो तो जातक के बहु विवाह होते हैं।
- मंगल तथा शुक्र सप्तम भाव में हो, शनि द्वादश भाव में हो और लग्नेश अष्टम भाव में हो तो जातक की तीन पत्नियाँ होंगी।
- यदि विवाह कारक शुक्र द्वि स्वभाव राशि में हो और उसका राशिश बली होकर सप्तमेश के साथ स्थित हो तो भी जातक के बहु विवाह होते हैं।
- लग्नेश अष्टम भाव में हो, सप्तम भाव पाप पीड़ित हो और सप्तमेश भी

पाप ग्रहों से युत हो, तो भी बहु विवाह के योग बनते हैं।

- नवमेश सप्तम भाव में हो, सप्तमेश चतुर्थ भाव में हो और सप्तमेश तथा एकादशेश एक दूसरे से केंद्र में हो, तो भी जातक के एक से अधिक विवाह होते हैं।
- सप्तम भाव में राहु या केतु हो और सप्तमेश वक्री हो या वक्री ग्रहों के साथ हो, तो भी एक से अधिक विवाह के योग बनते हैं।
- बृहस्पति षष्ठ, अष्टम या द्वादश भाव का स्वामी होकर सप्तम भाव या सप्तमेश को प्रभावित करे, तो नियम के अनुसार त्रिक भाव के प्रभाव के कारण विवाह को नुकसान भी पहुँचाता है और शुभ ग्रह होने के कारण विवाह के नए रास्ते भी बनाता है।
- सप्तम भाव और अष्टम भाव में पाप ग्रह हो, मंगल द्वादश भाव में हो और सप्तमेश की दृष्टि सप्तम भाव पर न हो तो जातक की पहली पत्नी की मृत्यु के बाद दूसरा विवाह होता है।
- सप्तमेश और एकादशेश एक ही राशि में हो या एक–दूसरे से सम–सप्तक हो या पंचम–नवम हों, तो कई विवाह होते हैं।
- द्वितीय भाव और सप्तम भाव में पाप ग्रह हों और द्वितीयेश तथा सप्तमेश के ऊपर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो भी जातक के बहु विवाह होते हैं।
- यदि विवाह कारक शुक्र और गुरु जन्म कुंडली या नवांश कुंडली में किसी पाप ग्रह की युति में या नीच राशि में स्थित हों, तो भी जातक के एक से अधिक विवाह की संभावना होती है।

इस तरह के और भी योगों को बताया गया है।

उपरोक्त तथ्यों को हम कुछ उदाहरणों से समझने की कोशिश करते हैं :

### उदाहरण कुंडली 1

**26/01/1978, 07.40 बजे, सीकर (राजस्थान)**

जातिका के दो विवाह हुए और अभी भी अपनी शादीशुदा जिंदगी से खुश नहीं है क्योंकि –

(i) लग्नेश अष्टम में और अष्टमेश लग्न में है।

(ii) सप्तम भाव का संबंध एकादश भाव से बन रहा है।

(iii) विवाह कारक शुक्र और पति कारक गुरु पीड़ित और त्रिक भावों से संबंध बनाए हुए हैं।

उदाहरण कुंडली 2 में जातिका के दो विवाह हुए क्योंकि

(i) सप्तमेश अष्टम भाव में और सूर्य से अस्त है।

(ii) विवाह कारक शुक्र का संबंध त्रिक भाव से है और पति कारक गुरु राहु–केतु एक्सिस में पीड़ित है।

### उदाहरण कुंडली 2

**21/06/1976, 16.37 बजे, दिल्ली**

(iii) सप्तम भाव का संबंध एकादशेश से है।

### उदाहरण कुंडली 3

**11/10/1975, 14.40 बजे, खरार, पंजाब**

जातक की तीन शादियाँ हुई हैं और अभी भी वर्तमान शादीशुदा जिंदगी ठीक नहीं है, क्योंकि

(i) सप्तमेश द्वादश भाव में है।

(ii) सप्तमेश का संबंध एकादश भाव से बना हुआ है।

(iii) गुरु वक्री होकर तृतीय भाव में और लग्नेश सप्तम भाव में है।❐

**पता** : 341 डी, पॉकेट जे एंड के दिलशाद गार्डन दिल्ली – 95
दूरभाष : 9899555631